॥ सर्वाधिकार सुरक्षित है ॥

* ॐ नमः शिवाय *

श्री भैरवस्तुति

श्री अभिनवगुप्त स्वामिना विरचिता

अनुवादक तथा प्रकाशिक
श्री गोपी नाथ सप्रू "मदन" काश्मीरी
भानु मुहल्ला श्रीनगर (काश्मीर)

—:०:—

श्री
अभिनव शक्ति प्रेस जम्मू में छप कर प्रकाशित हुई
मार्च १९६५
बार १०००] [मूल्य ७० पैसे

* प्राक्कथन *

(शिव-शा..) का काशमीर देश प्राचीन काल से अभेद उपासक रहता आया है। त्रिकादिमतों का महान् केन्द्र रहा है। इसी देश में महामहेश्वर श्री अभिनव गुप्त जी ने जन्म लिया है, जिनको साक्षात् शिवावतार माना जाता है। उनके अद्भुत दिव्य दर्शनों और चमत्कारों से ऋषी मुनी और यक्ष तक भी हर्ष-मग्न रहते थे। श्री अभिनव जी शिव शास्त्रों के ज्ञाता और सिद्ध थे।

इनही के आश्रम का श्री क्षीमराजकृत् ध्यान मुझे श्रीमान नील कण्ठ जी सेवक श्री विद्याधर जी से प्राप्त हुआ है। श्री नीलकण्ठ जी ने मेरा उत्साह और भी इस तरह बढ़ाया कि जब उन्हों ने मुझे श्री अभिनवकृत "भैरवास्तुति" को मात्रि भाषा (काशमीरी) में अनुवाद करके प्रस्तुत करने के लिए प्रेरणा की। इसी कारण मैं ने यह पुस्तक "भैरवास्तुति" का नाम देकर की। पदार्थ, भावार्थ और काशमीरी तीनों इस पुस्तक में मौजूद मैं श्रीमान नीलकण्ठ जीको धन्यवाद देकर आशा रखता हूं कि उत्साह बढ़ायें और अगर कोई त्रुटी रह गई हो तो क्षमा करें।

सेवक :—गोपी नाथ सप्रू "मत

ॐ संवित वपुषे शिवाय गुरुवे नमः

(ध्यान)

ॐ द्रष्टा रामस्य मध्ये स्फटिक मणिमये मण्डपे चि
पुष्पस्रुग्धूपदीपैर्बहल परिमले चर्चिते
वाद्यैर्गीतैः सनृत्तैः सततमुखरिते योगिनी चन्दनाद्
कीर्णे स्वर्णपीठे मृदुतलशयने सिद्धसङ्घैः
बद्धमुक्तावितान ॥१॥

आसीनः क्षेमराज प्रभृति भिरखिलैः सेवितःशिष्यवर्गैः
पादोपान्ते निषण्णैरवहित हृदयै-रुक्तमुक्त लिखाङ्कः।
द्वाभ्यां पार्श्वस्थिताभ्यां शिवरसकरकं पूर्णताम्बलपीठीं
दूतीभ्यांभिमृनीभ्यामऽपरकलसन्मातुलिङ्गोत्पलाभ्याम् ॥२॥

आनन्दान्दोलिताक्षः स्फुटकृत तिलको भस्मना भालमध्ये
रूद्राक्षोल्लासिकर्णः कलितकचभरो मालया लम्भकूर्चः।
रक्ताङ्गौ यक्षपङ्कोल्लसदसितगलो लम्भमुक्तो पवीतः
क्षौमंवासोवसानः शशिकरधवलं वीरयोगासनस्थः ॥३॥

जान्वासक्तैकहस्तः स्फुटपरमशिव ज्ञानमुद्राक्षसूत्रो।
वामश्रीपाणी पञ्चमस्वरमुखरिते वादयन्नाद वीणाम्।
श्री कण्ठेशाऽवतारः परम करूणया प्राप्त काशमीरदेशः
श्री मन्नः पातु साक्षादऽभिनववपुषः दक्षिणामूर्तिदेवः ॥४॥

श्री शम्भुनाथभास्करचरणनिपात प्रभापगतसंकोचम्।
अभिनवगुप्तहृदम्बुजमेतद्विचिन्वत महेशपूजनहेतोः
अभिनवरूपा शक्ति स्तदगुप्तो यो महेश्वरो देवाः
तदुभय यामलस्थमभिनव गुप्तं शिवं वन्दे ॥
तत्पाद पद्मयुगलस्मृति भास्कर मयूखवृन्दैः॥
विकसितकरणौघंलब्धक्षेमं क्षेमराजंवन्दे ॥

व्याप्तचराचरभावविशेषं
चिन्मयमेकमनन्तमनादिम् ।
भैरवनाथमनाथशरण्यं
त्वन्मयचित्ततया हृदिवन्दे ॥१॥

[पदार्थ]

चराचर—थावर-जंगम	भैरवनाथं—रछवुन प्रभु
व्याप्त—वातिथ	त्वन्मयचित्त—तस कुन मन दिथ तसुन्द मनस मन्ज़ ध्यान करिथ
भावविशेषं—रन्गू रन्गू रूप (पदार्थ) जगत	हृदि—हृदयि किन्य
चिन्मय—चैतन्यरूप (ईश्वर)	वन्दे—प्रणाम छुस करान
एकं—कुनुय	
अनादिम्—आदिरूस्त	

[भावार्थ [

सु परमेश्वर छु थावर जंगम सोरिसूय मन्ज रचि रचि वातिथ। रन्गू रन्गू पदाचन मन्ज छु वातिथ। सुयछु चिन्मय-स्वरूप (ईश्वर) कुन। न छुस अन्त न आद। सुय छु रछवुन। तस कुन मन लागिथ छुस हृदयस मन्ज़ तस प्रणाम करान।

[काशमीरी भाषार्थ]

वातिथ छु रचि रचि थावर तू जंगममसूय ।
आद अन्तू रूस्तुय चैतन्य स्वरूप सुय ॥
भैरव नाथ रछवुन अनाथन छुय ।
तन मन पूजन हृदयस मन्ज बुय ॥१॥

त्वन्मयमेतदशेषमिदानीं
भातिममत्वदनुग्रहशक्त्या ।
त्वं च महेश सदैव ममात्मा
स्वात्ममयं ममतेन समस्तम् ॥२॥

[पदार्थ]

त्वन्मय — चोन सरू वोल	सदैव—द्दहय
इततअशेष—इ सारि सोरुय	त्वंच—ब्यथि छुख चू
इदानीं—वञ	ममात्म—म्योन आत्मा
भाति—भास छु इवान्	तेन—तवय
त्वत —च्यानि	स्वात्म मयं मम—सोरुय म्योन पनुन
अनुग्रशक्तया—प्रसन्ताशक्ति सूत्य	
महेश—हे परमेश्वर	समस्तम्—इ सोरुय ब्यशवो

[भावार्थ]

हे परमेश्वर ! च्यानि प्रसन रोंजूनू सूत्य यूस च्य म्य प्यठ छय प्रसन्ता शक्ति सारमूच । तमि सूत्य छु वुञ म्य भासान इ सोरुय च्योन स्वरूप छुस बु पानस । तवय छु इ सोरुय ब्यशवो म्योनुय आत्म स्वरूप आसान ।

[काशमीरी भाषार्थ]

च्यानि अनुग्रह किन्य वुञ छुम म्य भासान् ।
यूत इ स्वरूप च्योन पानय बू आसान् ॥
ईश्वर ! चूय म्योन आत्मा आसान् ।
तवय किन्य इ ब्यश्वो म्योन आत्म आसान् ॥२॥

स्वात्मनि विश्वगते त्वयि नाथे
तेन न संसृति भीति कथास्ति
सत्स्वपि दुर्धरदुःखविमोह
त्रासविधायिषु कर्म गणेषु ॥ ३ ॥

[पदार्थ]

स्वात्मनि—म्यानसूय पनुनिस-आतमस मन्ज़	सत्स्वपि– सारी कर्म आसित्
विश्वगते—जगतम्य आसनुक सबब	कर्मगणेषु—कर्मन हन्दिडेर
त्वयि—च्ये	त्रासविधायिषु—भय दिन् वोल
नाथे—प्रभो । स्वामी	संसृति भीति कथा)—यमि ससारकयन अनेक बुथ्यन हन्ज़ अख कथा।
दर्धर—स्यठा मुशकिल	न अस्ति:—छ्यनन रोज़ान
सन्ताप—दुख (परेशानी)	
विमोह—भ्रमहियू	

[भावार्थ]

हे प्रभो यलि ज़न म्योन पान गव च्याञि प्रसन्तायि सूत म्य भास छु च्योन पान युस जगत मय छु त्यलि अगर म्य स्यठा कर्मन हून्दि डेर ति छिम इस म्म परेशान करहन। तिम रोज़न कति। इ रोजि संसार कथा ज़न ॥

[काशमीरी भाषार्थ]

म्योन पान यलि ज़न स्वरूप च्योन आसान् ।
सारिसूय स्वामी जगतमय आसान ॥
दुःख कर्म डेर ब्ययि भय भ्रम भासान् ।
ससार कथ अदू कति छय रोज़ान ॥३॥

अन्तक मां प्रति मादृशमेनां
क्रोधकरालतमां विदधीहि।
शङ्करसेवनचिन्तनधीरो
भीषण भैरवशक्ति मयोऽस्मि ॥४॥

[पदार्थ]

अन्तक—नाशक, (महाकाल)	शङ्कर !—भगवान शङ्कर
माम—म्य	सेवन—(सून्ज़) सीवा (तू)
प्रति—प्यठ	चिन्तन—समरण (सूत्य)
मां—म्य	धीरो—(छुम) फ़ख संभोलमुत
दृष्टमेना—नज़र नू	भीषण—स्यठा घोर (भयानक)
क्रोधकराल तमाम—स्यठा क्रोधू सान	भैरव !—भय दूर करवुन शिव।
	शक्ति मयोस्मि—(छुम) होष तू ह्यस फ़ख त्रोवमुत।
विदधीहि—त्राव।	

[भावर्थ]

हे महाकाल! सारिनूय अन्त करन वालि। म्य प्यठ मू त्राव इ दृष्टि खोफनाक। बू छुस तमिस शान्ति दिनूवालिस शङ्कर सून्जि सीवायि तू समरण सूत्य व्वञ स्यठा यथ संसारस मंज़ होसूलू वोल बन्योमुत। (हे महाकालू चू क्या करख म्य बू छुस शिव सेवायि किन्य अमर बन्योमुत)

[काशमीरी भाषार्थ]

क्रोध दृष्टि महाकाल मो त्राव म्ये।
खोचूवून्य तू कठोर योसू छय च्ये॥
शान्त रूप शिव सून्ज़ि पूज़ समरनि म्ये।
व्वञ छुम खोर ठीकरोवमुत म्ये॥४॥

इत्थमुपोढभवन्मयसंविद-
दीधितिधारित भूरितमिस्रः ।
मृत्युयमान्तककर्मपिशाचै-
र्नाथ नमोस्तु न जातुविभेमि ॥५॥

[पदार्थ]

इत्थं—इथू पाठ्य	मृत्य यम, अन्तक — महाकालू सून्दि स्वरूप
अपोढ—बडवून्य	कर्मपिशाचै—वंसित कर्म
भवननय—च्यानि स्वरूपचि	नाथ—हे, स्वामी
संवित—(अहंता) ज्ञान, ज्ञान	नमः अस्तु—नमस्कर छुय
दिधिति—ज़ूचूव सूतय	न जातु विभेमि—जाह ति छुस नू खोचान
धारित—गूलमुत	
भूरि—स्यठाग्वन	
तमिस्र:—अन्दकार वोल	

[भावार्थ]

हे स्वामी ! यलि जन मनुषस च्यांञ ज़ान छि सपदान । ज्ञान छु बनान । त्यलि इथिस दास भक्तिस क्या सना करि महाकाल । इ छु त्यलि सपदान यलि च्यात्र आसान छि कृपा । इच्छ कृपा करनू किञ छुस दास नमस्कार करान् ।

[काश्मीरी भाषार्थ]

च्यान्यि ज़ान्य सूत्य यलि ज्ञान आसि आमुत् ।
तमि ज़ान्य अन्दकार कर्म नीच च्छ्योनमुत् ॥
काल क्या करि तस दास च्योन खोचि कव्त् ।
छुय प्रणाम म्योनुय कूरथम ई मये रुत् ॥५॥

प्रोदितसस्यविबोधमरीचि-
प्रोक्षितविश्वपदार्थ सतत्त्वः।
भावपरामृतनिर्भर पूर्णे
त्वय्यहमात्मनि निर्वृतिमेमि ॥६॥

[पदार्थ]

प्रोदित—जान पाठय खचूमूच	परमामृत—परम अमृत
सत्य—पूज (Truth)	निर्भर—भरिथ
विबोध—ज्ञान	त्वय्य पूर्ण—च्य परि पूर्णस मन्ज
मरीचि—ज़ूचू	अहं—बो
प्रोक्षित—सगवित	निर्वृति एमि—आन्नद छुस लबान
सतत्त्व—पननि स्वरूपू सूत्य	
भाव—पदार्चू	विश्व—जगत

[भावार्थ]

पजि़ ज्ञानूचि ज़ूच छि जान पाठय सगविथ उदयस आमच। यमि सूत्य सारी जगतचि सारेय पदार्चू छि इ परम अमृत प्रावान। तिथू पाठय छुस बो परम आनन्द लबान्। तस ईश्वरू सुन्द ज्ञान प्राविथ यमि सून्दि किन्य सोरुय ई व्यश्व छु उदचार लबान। बुति छुस तमी किन्य परम आन्दुक भागी बनान ति क्याजि त्यलि छुस बुति अमि ज़ूचि सगूवनू इवान्।

[काशमीरी भाषार्थ]

पजि ज्ञान बोध ज़चू उदयसमन्ज इथ्
परम अमृत पदार्थन मन्ज़ सगविथ।
भाव रूपू पूर्णस मनज़ पूर्ण बनिथ-
बुति छुस परमानन्द प्रावाविथ॥

मानसगोचरमैति यदैव
क्लेशदशाऽतनुतापविधात्री ।
नाथ तदैव मम त्वदभेद-
स्तोत्रपरामृतवृष्टिरुदेति ॥८॥

[पदार्थ]

मानस गोचरम्—मनस भीदरूपी दुःख	नाथ !—हे स्वामी
	तदाएव—तमि विज़ि
एति —)छु इवान्	मम—म्योन
यदाएव—)यलि ज़न्	त्वत—च्य सूत्य
क्लेशदशा—भीद व्यवहारुक सन्कट	अभेदस्तोत्र—अभेद अस्तुति
	परामृत—अमृत (परम आनन्द)
ताप विधात्री) संकट स्यठा अतनु) दि वोल्	वृष्टि—(अमृत) वर्षा

[भावर्थ]

यमि विज़ि मन छु भीद दुःखस मन्ज़ (व्यशयन संसारक्यन) बुडान् तूछिस दुःख ईरनावान् । तमि विज़ि हे प्रभो ! छु अख अभेद रूप नाम सुमरण तू कीर्तन च्यान अमि सन्कट मन्ज़ू कडान् ॥

[काशमीरी भाषार्थ]

यलि छिम भेदरूप विशय मनि उपदान्
त्यलि छिम स्यठा दुःख ब्रोन्ह ईवान् ।
ही प्रभो ! तमि विज़ि छुस तोता करान्
योसू ज़न अभेद अमृत रूद त्रावान् ॥८॥

शङ्कर सत्यमिदं व्रतदान
स्नानतपो भवतापाविनाशि।
तावक शास्त्रपरामृतचिन्ता
सिन्धति चेतसि निर्वृतिधारा:॥६॥

[पदार्थ]

हे शङ्कर!—हे शिव	तावक शास्त्र) — च्यानि शस्त्रुक
सत्य—पोज़ छु	परामृत) छु थोद अमृत
यदं—इ	चिन्ता—ज़ानिथ
वृत, दान,) — फाकू, दान स्नान, तप) सनान तू तप	चेतसि—मनस मन्ज़
भव—(यमि) संसारूक	सिन्धति—त्रावान्
ताप—दु:ख	निवृति—परम आनन्द
विनाशि—नाशकनवोल	धारा—(त्रावान) छु वर्षा

[भावार्थ]

हे परम शान्ति दिनू वालि शिवू। इ छु ठीख कि तप दान, स्नान आदि छि संसारूक दु:ख नाश करान। मगर शिव शस्त्र (पज़वथ) च्योन छु परम वथ परम आन्द अमृत (असि) मनस त्रावान। यच्छय पज़ू वथ छु चोन बोध।

[काश्मीरी भाषार्थ]

हे शिवू! इ छु पोज़ व्रत दान तप स्नान
तिम ज़न छि दु:ख संसारूक निवारान्।
च्योन शिवू शास्त्र अमृत छु हारान्
परमानन्द सुख वर्षुन सु त्रावान् ॥८॥

नृत्यति गायति हृष्यति गाढं
संविदियं मम भैरव नाथ।
त्वां प्रियमाप्य सुर्शनमैकं
दुर्लभमन्यजनैः समयज्ञम् ॥६॥

[पदार्थ]

नृत्यति—नचान्	अपि—आध्य—लबिथ
गायति—ग्यवान्	ऐकं—कुनुय
हृषति—खुश गच्छान्	सुदर्शन—सूयं ह्यू सुन्दर
संविदि—म्यांन ज्ञान	दुर्लभ—कठयून
भैरव नाथ !—भय दूर करन बोल प्रभो	जनै—पुरुषन
त्वां—चू	समयज्ञ—सम दश तू यज्ञ (किन्म)
प्रिय—टाठि	

[भावर्थ]

हे शङ्कर ! चू छुख भय दूर करान तू अभय थवान। च्यान ज्ञान छि (म्य मन्ज़) स्यठा हर्षस मन्ज गच्छित नचान ग्यवान। यमि ज्ञान चू परम टोठ बुछुख सूर्यव खोतू सुन्दर। इज़न समदर्श यज्ञ किन्य ति छु ब्ययन कठ्युन आसान।

[काशमीरी भाषार्थ]

भैरवनाथू ! लुबनख मियान्नि ज्ञान्नि चूय
नचूवृन्नि छि गिन्दूवृनि छि हर्षस मन्ज़ सुय।
प्राविथ चू टोठ सूर्यं खोतू सुन्दर चूय
समदर्शू यज्ञ कठिनूय ब्ययन छु सुय ॥६॥

वसुरस पौषे कृष्ण दशम्यामस-
भिनवगुप्तः स्तवमिम करोत- ।
येन विभुर्भवमरूसन्तापं
शमयति झटति जनस्यदयालुः॥१०॥

[पदार्थ]

वसु—आठ (eight)
रस—श्य (six)
पौष—नव (nine)
कृष्णदशयमयां—गटूपछि दहम्
अभिनव गुप्त—अभिनवजी
इमं स्तवम—इ अस्तुति
अकरत—वनिन । ग्यवून
(बनोवुन्)

तेन—अमि सूत्य
विभु—सर्वव्यापक शिव!
भवसर—संसारुक
संताप—दुःख
झटइति—जलदूय
शमति—शान्त बनावन्
दयालु—दयावान् (शिव)

[भावार्थ]

८६६ सन्स (आठ शत कुनू सतथ) मन्ज पोह गटू पछ दहम दोह बनोव इ अस्तुति अभिनव गुप्ताचार्यन । इ अस्तुति परनू सूत्य छु सु दयालु दयावान स्यठा जलद शान्ती दिथ संसार दुःख चटान् ॥

[काशमीरी भाषार्थ]

आठ शे तू नव सनू चामुत पोह आस्
पोहची दहम् आंस ब्ययि गटू पछ आस् ।
अभिनव गुप्तन बनोव परूवुन आस्
परि युस सु शिव चटि तस संसारू कोस ॥

(इति अभिनवकृत भैरवस्तुति)

* आर्चर *

च्यथ प्रकाश म्योन् प्रज़लावतम् ।
शिवू सन्मुख भास्तम् ॥
दारनायि मन्ज़ सुय च्छोरुम् ह्यरि व्वनू सूय गोरुम्
ई चू छुख ती न्वन भास्तम् ॥०
चूय महादीव छुख चराचर च्यय वतान पर चूय अपर
द्वनवून हुन्द मूल भास्तम् ॥०
कालस छुय च्योनुय भय ह्यरि व्वनू जगतस छुय शय
आश छयम सुय रूप भास्तम् ॥०
आमुत छुस छयूम च्यान आश शुद्ध व्यध्यायि कर वाश
शुद्ध बूध अमृत म्य भास्तम् ॥०
च्यतव्यमशं रूपू भास इखना परम रूप हावखना
ब्रह्म-रन्द्रस मन्ज़ म्य भास्तम् ॥
व्यष्यन हुन्द युस म्य सुख छुय पोषूअन्ज़ लागय च्य सुय
हर्ष-व्यमर्श रूप भास्तम् ॥०
दूर छुख या नीर करम्य ज़ान रूप वुछि च्योन मूर्तिमान्
त्र्यन ज़ू तूद्वन कुन म्य भास्तम् ॥०
ज्ञान दिथ म्य ज़ान करनाव शांभवपाद वरनावू
सुय पराप्रकाश भास्तम् ॥०
एन्द्रिय यलि इन म्य सोरान अद् छयनू कथू फोरान
तमि विज़ि शान्त रूप भास्तम् ॥०
अज्ञानुक छुम म्य अन्दकार ब्रोन्ह पकनस छुमनू वार
ज्ञान् गाशुक चोंग भास्तम् ॥०
परम कलायि सान परम तीज़ परम धारस मन्ज़ सु बीज़
सुय बीज़ू मन्त्र चू भास्तम् ॥०

ज्योग्य् वनितोस या सन्यास वनितोस शुम्शानू वास्
वनि इथ म्ये मनि भास्तम् ॥०
छुस अनाथ बो छुमन कान्ह् म्ये आस पादन तल बो च्ये
करुणा सागर म्य भास्तम् ॥०
अन्द्रि चूरन न्यन्द्रि पोवुस निथ सोर छयोन थोवुस
दुःख हरतम सुख भास्तम् ॥
ाश आसूम रव आश त्रावूम पज़ वथ नू कान्सि हावूम
जान्य रोस्त छस ज़ान भास्तम् ॥०
ओसुम इ क्यन्ह ख्यावनोवुम बानू ठानू रुस्त थोवुम्
करम्य अनुग्रह न्वन भास्तम् ॥०
प्रकाशू च्यानि गाशू सूती तारु तरि भक्त कुती
शासू उशासू वासू भास्तम ॥०
द्वन यन चोन पांन्च तोतूनूय करू क्या तिमछि सुतूनूय
ज़ार म्योन बोज़वारू भास्तम ॥०
बिन भावचि पाशू मूचू रथ वासनायि रगू चुमूरिथ
शिव-शक्ति रूप कुन भास्तम ॥
सासू दलूके वासू भासुम शासू उशासू रुम रुम
ख्यन ख्यनू "मदनस" म्य बास्सुतम ॥०

"परम शिव" तत्त्व

इमव रूटमुत शाह छुय न्यत्रलोलू हतिछिव अशि बरिथ
तिथी यूगीश्वर छी पनुन आत्मा युथ तियूथू सोरिथ
हृदय अहलादस मन्ज़ यथ न वांनी ज़ानि महिमा
अमृत सर स्राना ह्यि छुखचू परिपूर्ण तियूथ बरिथ ॥२५॥
॥म० स्त० २५॥

"मदन कवितायें"

१. श्री महिम्नस्तोत्र्	काशमीरी भाषार्थ शिवानन्द लहरी सहित	
२. ,, पञ्चस्तवी	,, ,,	(भाग १)
३. ,, गजानन (हेमजा...)	,, ,,	
४. ,, शिव चामरस्तुति	,, ,,	(भाग २
५. ,, गौरी अस्तुति	,, ,,	
६. ,, गजानन	,, ,,	(भाग
७. ,, शक्ति योग मदन्	,, ,,	(भाग
८. ,, शक्ति योग मदन्	,, ,,	(भाग २
९. ,, शक्ति योग मदन्	,, ,,	
१०. ,, राज्ञास्तोती	(विरिचिता स्वामी व्यख्याधर जी)	
११. ,, दक्ष संहार (सती शिवा)	,, ,, ,,	(शिव विव
१२. ,, भैरवास्तुति	,, ,, ,,	

छप गई हैं ॥

मिलने का पता :—

१. श्री ज्यष्टा-मण्डली गुपकार काशमीर।
२. ,, राज्ञा मण्डली, तुलमुला, काशमीर।
३. ,, अमृत कुण्ड पुखरीबल, श्रीनगर, काशमीर।
४. ,, जे० एन० मोज़ा, क्लाथ मर्चैंट, हबा कदल, श्रीनगर।

इस के अतियुक्त :—

१. श्री राम गीता
२. ,, मदभगवत गीता जी पूर्ण व सार
३. ,, सुन्दर लहरी
४. ,, वैराग्यशतक
५. जप जी साहिब
६. सुख मनी साहिब
७. संग्रहेनस्तोत्र
८. ईशान० उपनिशद
९. सती अनुसूया

इतियादि........)

जल्दी ही छप कर आ रही हैं ॥

सफ्रू

विक्रम के १६३० वर्ष में मनुष्यजाति को संशोभित करने वाले तथा अच्छी कीर्तिवाले सन्तों के लक्षणों से युक्त श्री केशव [भट्ट] नाम वाले, अत्रि-महर्षि के गोत्र में पैदाहुए ॥ १ ॥

यह बडे भाग्य शाली ब्राह्मण थे इन्हें वेदमात. गायत्री पर अटल भक्ति थी और इन में शम, दम तथा त्याग यह गुण सदा मौजूद थे ॥ २ ॥

इन्होंने यम [अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह] तथा नियम [शौच, तप, संतोष, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान] से युक्त होकर अपनी इष्ट देवी [गायत्री] का विधि पूर्वक पुरश्चरण किय और ये जीवन्मुक्त हुए ॥ ३ ॥

कर्मकाण्ड की पुस्तकें स्तोत्रावलियां गणेशादि देवों की सहस्रनाम वलियां तथा भवानी, शिव, विष्णु आदि, की पूजाविधियां नित्यकर्म विधि, और अन्य पुस्तके छपवा कर इन्होंने लोगों का अज्ञान [पुस्तक प्रचार से] दूर किया जिस से यह यशस्वी हुए ॥ ४ ॥

ये प्रति वर्ष पंचांग को शुद्ध गणित करके छपवाते थे जिससे ये श्रेष्ठ ज्योतिषी लोगों के भ्रम को हटाते थे ॥ ५ ॥

इन्होंने बंधन हीन होकर वि० सं० २००६ में नश्वर भौतिक शरीर छोडा है और ये परंब्रह्म में लीन हुए हैं ॥ ६ ॥

गोबिन्द भट्ट के यह श्रद्धापुष्प श्री केशव भट्ट के चरण कमलो पर सादर समर्पित होवें ॥ ७ ॥ * * * * * * * * * * * * * * * * *

हर प्रकार की धार्मिक पुस्तकें आपको इस पत्ते पर मिल सकते हैं :-

१ प्रेम नाथ ज्यो० . मालिक कृष्णा प्रिंटिंग प्रेस कोठी भाग श्रीनगर काश्मीर

२ टीका लाल ज्योतिषीं रैणा वारी श्रीनगर काश्मीर